

कार्ल पापर 1902-1994

अध्ययन सामग्री निर्माण

डा शकील हुसैन

विभागाध्यक्ष राजनीति विज्ञान

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय
महाविद्यालय ।

दुर्ग छत्तीसगढ़ ।

नैक द्वारा A+ मूल्यांकित

1- खुले समाज की व्याख्या

2- इतिहासवाद का खण्डन

3- हेगेल के नियतिवाद का खण्डन

DR. SHAKEEL HUSAIN
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

महत्वपूर्ण रचनाएं

- 1- The open society and it's enemies.
- 2- The Logic of Scientific Discovery.
- 3- IN Search of a better World.
- 4- All Life is Problem Solving unended quest.
- 5- The Self and it's brain.
- 6-The poverty of historicism.

1- खुला समाज और उसके दुश्मन।

2- वैज्ञानिक खोज का तर्क।

3- एक बेहतर दुनिया की खोज मे ।

4- सम्पूर्ण जीवन समस्या समाधान का अंतहीन अन्वेषण

5- स्वयं और उसका मस्तिष्क।

6-इतिहासवाद की गरीबी।

कार्ल पापर की मशहूर पुस्तक ओपन सोसायटी एण्ड इट्स एनिमीज 1945 में दो खण्डों में प्रकाशित हुई। जिसमें उन्होंने राजनीतिक चिन्तन के अलग-अलग कालखण्ड के तीन ऐसे राजनीतिक दार्शनिकों को चिन्तन का विश्लेषण किया जिन्हें सर्व कालिक और महानतम माना जाता है। वो हैं प्लेटो, हेगेल, और मार्क्स।

इन तीनों दार्शनिकों के सम्पूर्ण चिन्तन का Popper ने बहुत ही आलोचनात्मक विश्लेषण किया। और बताया कि इन तीनों का सम्पूर्ण चिन्तन खुले समाज और लोकतंत्र के मूल सिद्धान्त के विरुद्ध है। ,

खुले समाज की व्याख्या -

Popper के अनुसार राजनीति से पहले समाज का खुलापन जरूरी है। खुले समाज का अर्थ है, समान बंधन रहित स्वतंत्रतायुक्त समाज। जिसमें सबको समान स्वतंत्रता मिली हो। सब एक जैसी समान स्थिति में हो, लोगों के ऊपर सामाजिक नियंत्रण न हो। लोग अपनी इच्छा अनुसार अपने कार्य का चयन कर सकें और उनमें परिवर्तन भी सकें। अर्थात् लोगों के पास विकल्प की स्वतंत्रता हमेशा उपलब्ध हो। दूसरे शब्दों में समाज की वर्गीय संरचना इतनी ढीली ढाली हो कि उसमें कोई भी बंधा हुआ महसूस न करे।

साधारण शब्दों में खुला समाज एक ऐसा प्रतियोगी समाज होता है। जिसमें व्यापार विचार कार्य लेखन आदि कि ना केवल पूर्ण स्वतंत्रता हो बल्कि उसको पालन करने के पूरे साधन भी हो । इसमें पापर एक ओर महत्वपूर्ण विशेषता जोड़ते है। विरोध करने का अधिकार ।

खुला समाज ऐसे अनगिनत और अनजाने स्वतंत्र लोगो का समूह है जिनके मस्तिष्क और वाणी स्वतंत्र है जो किसी भी सर्वोच्च सत्ता को मानने के लिए मजबूर नहीं है। और जो परम्पराओ - और पुरानी मान्यताओं के बंधनो से बंधे हुए नहीं है। और जिन्हें स्वतंत्रता, मानवता और विवेकपूर्ण आलोचना का अधिकार है ।

ऐसे खुले समाज की कुछ विशेषताएँ है। जिनके आधार पर पापर प्लेटो ,हेगेल और मार्क्स का मूल्यांकन करते है।

1-स्वतंत्रता - पापर के अनुसार Plato के चिंतन मे स्वतंत्रता के लिए कोई स्थान नहीं है । मानव , राज्य नियंत्रित एक ऐसी योजना में केवल मजदूर या दास है। जिसका निर्णय एक तथाकथित दार्शनिक राजा द्वारा किया जायेगा । व्यक्ति शिक्षा योजना की मशीन से या तो उत्पादक, सैनिक या शासक बनेगा । अर्थात् न तो कोई विकल्प की स्वतंत्रता है और न ही राज्य के प्रति विरोध का अधिकार ।

इसी प्रकार हेगेल का महत्व पूर्ण कथन है कि "राज्य पृथ्वी पर ईश्वर का अवतरण है " इसलिए राज्य में स्वतंत्रता का अर्थ आँख मूंद कर राज्य के कानून पालन है। व्यक्ति राज्य में समाहित हो जाता है। और उसका कोई अस्तित्व नहीं होता है। उसके अधिकार नहीं होते हैं। उसके केवल कर्तव्य है । राज्य कानून का पालन करना ही स्वतंत्रता, अधिकार, और कर्तव्य है । इस प्रकार के चिन्तन से केवल हिटलर और मुसोलिनी पैदा हो सकते हैं, जो कि हुए। पापर ने सबसे अधिक मार्क्स की आलोचना की है क्योंकि खुले समाज की शत्रुता में मार्क्स प्लेटो व हेगेल से बहुत आगे जाता है। और न केवल खुले समाज का विरोध करता है बल्कि वह खुले समाज को नष्ट करने को जरूरी भी बताता है। मजदूरों द्वारा हिंसक क्रान्ति करके पूंजीवाद के सारे लक्षण किये जाएंगे । और समाज को एक ऐसे अन्धकार में ढकेल दिया जायेगा जो सर्वाहारा की तानाशाही बर्दाश्त करने के लिए मजबूर होगा। कार्ल पापर के अनुसार तीनों ही दार्शनिकों की निगाह में सम्पत्ति की आजादी का कोई अर्थ नहीं है जिसके अभाव में मानवीय प्रेरणा समाप्त हो जाती है। मानव मस्तिष्क का सदुपयोग नहीं हो पाता । इसलिए पापर तीनों को ही खुले समाज का शत्रु बताता है।

DR. SHAKEEL HUSAIN
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

मानवता :

पापर के लिए मानवता की अवधारणा नैतिक या सांस्कृतिक नहीं है । पापर के लिए मानवता का अर्थ राजनीतिक है । यह एक न्यायपूर्ण स्थिति है जिसमें सब एक ऐसी समान स्थिति में है जिससे कार्य करने, विचार करने और विरोध करने की समान स्वतंत्रता सबको प्राप्त है और समाज इस समान स्वतंत्रता की सुरक्षा की अघोषित गारन्टी देता है।

पापर के अनुसार प्लेटो के चिन्तन में मानवता का अर्थ है शिक्षा व्यवस्था में शामिल हो जाना और साम्यवाद के नियम का पालन करना ।

हेगेल के लिए मानवता है- राज्य के प्रति आज्ञाकारी बने रहना ।

मार्क्स के लिए मानवता का अर्थ है केवल सर्वहारा लिए मानवता ।

पूंजीपतिओं के विरुद्ध खतरनाक हिंसा और हिंसात्मक क्रांति द्वारा सर्वहारा की तानाशाही स्थापित करना ।

इतिहासवाद का खण्डन

पापर के अनुसार तानाशाह और सर्वाधिकारवादी शासन अपनी सत्ता को सही सिद्ध करने के लिए इतिहास की मनमानी व्याख्या करते हैं । इस प्रकार झूठा इतिहास और उसकी मनमानी व्याख्या तानाशाहों की मुख्य ताकत होता है ।

इसलिए पापर ने इतिहासवाद की कठोर आलोचना की है । इसलिए पापर की मान्यता है कि

इतिहासवाद एक मिथ्या चेतना है। ऐतिहासिक घटनाएं किन्हीं बंधे बंधाए नियमों के आधार पर घटित नहीं होती जिसे सामाजिक नियमों द्वारा पता लगाया जा सकता है। जबकी मार्क्स ने यही किया था। Marx के अनुसार समाज को चलाने वाली व्यक्ति आर्थिक है। आर्थिक शक्ति राजनीतिक शक्ति द्वारा समाज से कब्जा कर लेती है। इसलिए समाज में सदैव शोषक और शोषित के दो वर्ग रहते हैं। क्रान्ति द्वारा सामाजिक परिवर्तन कर शोषित वर्ग तानाशाही स्थापित होगी और आदी साम्यवाद आयेगा। मार्क्स की इसप्रकार की भविष्यवाणी स्वयं में मिथ्या चेतना है। ऐतिहासिक घटनाओं के आधार पर कोई भविष्यवाणी नहीं की जा सकती।

इतिहासवाद का सहारा खुले समाज के दुश्मनों द्वारा लिया जाता है। खुले समाज के दुश्मन इतिहास और संस्कृति गान के आधार पर परिवर्तनों का विरोध करते हैं अथवा मनमाने सर्वाधिकारवादी परिवर्तन करना चाहते हैं।

इस प्रकार इतिहासवाद सर्वसत्तावाद का आधार बन जाता है। पापर ने प्लेटो के सर्वसत्तावाद की आलोचना भी इसलिए की क्योंकि उसने दार्शनिक राजा के चिन्तन के द्वारा सर्वसत्तावाद को बनाये रखने का प्रयत्न किया। उसने विशिष्ट वर्ग को सत्ता प्रदान करने के लिए मानव स्वभाव की मनमानी व्याख्या की।

Popper इतिहासवाद को सर्वसत्तावादियों का एक ऐसा उपकरण मानता है जिसके आधार पर वह खुले समाज विरोध करते हैं।

हेगेल के नियतिवाद का खण्डन

पापर के अनुसार हेगेल ने सर्वसत्तावाद और राज्य को सर्वोच्च बनाने के लिए नियतिवाद का सहारा लिया जो कि इतिहासवाद का ही एक रूप है। जिसका अर्थ है। कि जीवन में परिवर्तन की शक्तियां निश्चित हैं उन परिवर्तनों में मनुष्य की अपनी कोई भूमिका नहीं है। इसलिए लोगों का यह कर्तव्य है कि वह चुपचाप राज्य की आज्ञा का पालन करे।

पापर के अनुसार यह प्रवृत्ति खुले मान्यताओं जैसे स्वतंत्रता, सामनता, लैंगिक सामनता, विरोध करने का अधिकार, विचार की स्वतंत्रता आदि के विरुद्ध है। इसलिए पापर इतिहासवाद और नियतिवाद की कठोर आलोचना करते हैं। और इसलिए वह प्लेटो, हेगेल और मार्क्स की आलोचना करते हैं। क्योंकि तीनों ही अपनी इतिहासवादी और नियतिवादी दृष्टि के कारण खुले समाज शत्रु हैं।

संदर्भ

कार्ल पापर, स्टीव बी स्मिथ , एडम एण्ड डायसन

DR. SHAKEEL HUSAIN

DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE